

**सिंघनी** वि. (तद्.) सिंहल द्वीप संबंधी, सिंहल का स्त्री. 1. सिंहल की भाषा 2. एक तरह की पिप्पली।

**सिंघाड़ा** पुं. (देश.) 1. पानी में पैदा होने वाला एक पौधा जिसमें लगने वाले फल में दोनों ओर सींगों की तरह दो काँटे होते हैं 2. सिंघाड़े के आकार की एक मिठाई व नमकीन (समोसा) 3. तिकोनी सिलाई 4. माला बनाने का सुनारों का एक औजार 5. एक प्रकार की मुनिया चिड़िया 6. एक प्रकार की आतिशबाजी।

**सिंघाड़ी** स्त्री. (देश.) सिंघाड़ा पैदा करने का छोटा तालाब।

**सिंघाण** पुं. (तत्.) 1. लोहे पर लेने वाला 2. नाक से निकलने वाला मल, सीड़।

**सिंघासन** पुं. (तद्.) दे. सिंहासन।

**सिंघिनी** स्त्री. (तद्.) शेरनी, सिंहनी।

**सिंघिया** पुं. (तद्.) सिंगिया नामक विष वि. गाय की सींग में इसे बाँधने पर दूध का रंग लाल हो जाता है।

**सिंघी** स्त्री. (देश.) 1. सिंगी मछली 2. सोंठ 3. सिंगिया (विष)।

**सिंघू** पुं. (देश.) एक प्रकार का जीरा जो फारस से प्राप्त होता है तथा जो काले जीरे की तरह होता है।

**सिंघेला** पुं. (देश.) 1. शेर का बच्चा 2. वीर पुत्र।

**सिंचन** पुं. (तत्.) 1. खेतों आदि में पानी सींचने की क्रिया या भाव, सिंचाई का कार्य 2. पानी का छिड़काव।

**सिंचना** अ.क्रि. (तद्.) सिंचाई होना, सींचा जाना, जल का छिड़काव होना।

**सिंचाई** स्त्री. (हि.) 1. सींचने का काम या भाव 2. फसलों की वृद्धि के लिए खेतों आदि में जल डालने या पहुँचाने की प्रक्रिया।

**सिंचाना** स.क्रि. (तद्.) सींचने के काम में किसी अन्य को प्रवृत्त करना।

**सिंचित** वि. (तत्.) सींचा हुआ, जिसकी सिंचाई हो चुकी हो।

**सिंचौनी** स्त्री. (देश.) सिंचाई।

**सिंजा** स्त्री. (तत्.) शरीर पर पहने हुए गहनों के हिलने आदि से उत्पन्न होने वाली झंकार।

**सिंजाफ** पुं. (फा.) संजाफ।

**सिंजित** स्त्री. (तत्.) 1. सिंजा 2. शब्द 3. ध्वनि।

**सिंडीकेट** पुं. (अं.) 1. किसी उद्देश्य की संपूर्ति हेतु बनाई गई व्यापारिक संस्थाओं की समिति 2. सीनेट की प्रबंध समिति।

**सिंदन** पुं. (तद्.) रथ।

**सिंदुक** पुं. (तत्.) सिंदुवार या सँभालू नामक पौधा।

**सिंदूरिया** वि. (तद्.) सिंदूर के रंग का स्त्री. सिंदूरी, सिंदूरपुष्पी।

**सिंदुवार** पुं. (तत्.) एक झाड़ीदार वृक्ष, निर्गुंडी, सँभालू।

**सिंदूर** पुं. (तत्.) 1. बलूत की जाति का एक पर्वतीय वृक्ष 2. ईंगुर को पीसकर बनाया गया लाल रंग का चमकीला चूर्ण जिसे सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपनी माँग में भरती है, हुनमान जी की मूर्ति पर भी इसे घी में मिलाकर लगाया जाता है मुहा. सिंदूर भरना- विवाह के समय कन्या की माँग में वर द्वारा सिंदूर डालना।

**सिंदूर-तिलक** पुं. (तत्.) 1. सिंदूर का चिह्न 2. हाथी।

**सिंदूर-तिलका** स्त्री. (तत्.) वह सधवा या सुहागिन स्त्री जिसके माथे पर सिंदूर या सिंदूर की बिंदी लगी होती है।

**सिंदूरदान** पुं. (तत्.) विवाह के समय वर द्वारा कन्या की माँग में सिंदूर भरने का कार्य।

**सिंदूर पुष्पी** स्त्री. (तत्.) एक पौधा जिसमें लाल रंग के फूल लगते हैं, वीरपुष्पी, सदासुहागिन, सिंदूरी।

**सिंदूरिया** वि. (तद्.) 1. सिंदूर के रंग का स्त्री. सिंदूर पुष्पी, सदा सुहागिन।